Introduction

विवेच्य विषय की प्रस्तुति

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित किया गया है।

'प्रथम अध्याय' में कवि जयसिंह 'व्यथित'जी की जीवनी पर प्रकाश डाला गया है। उनका जन्म, जन्मस्थान, पूर्वज, माता-पिता, परिवार, उनकी अपनी गृहस्थी, उनका बचपन, युवा-अवस्था, उनकी शिक्षा, उनका दांपत्यजीवन और संतति-विस्तार के प्रमाणित तथ्य इस अध्याय में प्रस्तुत किये गए हैं। इसी अध्याय में कवि श्री जयसिंह 'व्यथित'जी के व्यक्तिव एवं जीवनी पर, उनकी सहज और उदार मनोवृत्ति, उनका संवेदनशील व्यवहार, समाज के प्रति उनकी समर्पित निष्ठा, राजनीति के प्रति उनका व्यक्तिगत उत्साह, नैतिक नेतृत्व की उमंग, सामाजिक हित के लिए उनके रचनात्मक काव्य, एक शिक्षक के रूप में उनका गरिमामय व्यक्तित्व तथा एक कवि और शिक्षा जगत में उनके विशिष्ट योगदान को लेकर अनेकानेक शिक्षा-संस्थानों के स्थापना के संदर्भ में उनका अथक् प्रयास इस

अध्याय में विश्लेषित किया गया है।

'द्वितीय अध्याय' में कवि जयसिंह 'व्यथित'जी के कार्य क्षेत्र को विश्लेषित करते हुए उनका सामाजिक रुझान उनकी क्षेत्रीय राजनीति तथा ग्राम्य परिवेश से उनकी आत्मिक लगाव व्याख्यायित किया गया है। डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी एक समाज सेवक के रूप में तथा शिक्षा शास्त्री के रूप में अपने परिकर में प्रसिद्ध हैं। पत्रिकाओं का प्रकाशन, ग्रंथों का प्रकाशन, कवि, विद्वानों एवं रचनाकारों का सम्मान आदि कार्य उनकी प्रवृति से जुड़े हुए हैं। व्यावहारिक दृष्टि से उनका कार्य क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है तथा इस संदर्भ में उन्हें अनेक सिद्धियाँ भी प्राप्त हुई हैं। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं अनेक संस्थाओं के स्थापक डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी सर्वजन हिताय परोपकार में सदैव संलग्न रहे हैं। प्रस्तुत अध्याय में इनकी इसी उदारचेतावृत्ति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।

'तृतीय अध्याय' में वैसे तो डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी के कार्य क्षेत्र के संदर्भ में उनकी सामाजिक उपलब्धियों को रेखांकित किया गया है, किन्तु इस अध्याय में उनका समाज से सीधा सरोकार, उनकी सामाजिक प्रवृतियाँ और उनकी समाज सेवा के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है। अहमदाबाद जैसे महानगर में डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी द्वारा संस्थापित सामाजिक संस्थाओं ने जिन महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्माण किया है, उनका विवरण इस अध्याय में किया गया है।

यह अध्याय विस्तृत रूप से सामाजिक क्रियाशीलता तथा उनके उदारवादी विचारों को स्पष्ट करता है।

'चतुर्थ अध्याय' में डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी की काव्य रचनाओं पर प्रकाश डाला गया है। व्यथित जी का काव्य एक विकासशील काव्य है। जिस प्रकार बचपन से वृद्धावस्था तक किसी व्यक्ति में परिवर्तन और विकास की स्थितियाँ होती हैं, इनके काव्य में वे बातें दिखाई देती हैं। इनकी काव्य रचनाओं की पृष्ठभूमि

पौराणिक और आधुनिक दोनों हैं। इस क्रम में 'राघवेन्द्र' में व 'कैकेयी के राम' में राम, 'बालकृष्ण'में कृष्ण, 'दलितों के मसीहा' में डॉ. आम्बेडकर, 'नेताजी' में सुभाषचन्द्र बोस और 'घनश्याम-विजय' में स्वामी हरिनारायण जी को अपना चरित्रनायक बनाकर काव्य की रचना की गई है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित'जी की कविता में नारी के प्रति उदात्तभावना, दलितवर्ग, देश एवं समाज की वर्तमान दुर्दशा एवं उसके अध:पतन से उपजीं गरीबी, बेरोजगारी, अनैतिकता, शोषण एवं राजनैतिक भ्रष्टाचार आदि समस्याओं ने आत्मा को व्यथित कर दिया है। ये देश के नवनिर्माण के लिए जनसामान्य का आह्वाहन करते हैं।

डॉ. व्यथितजी की कविताएं प्रकृति के साथ घनिष्ट संबंध रखती हैं। कविताओं में प्रकृति के विभिन्न रूपों का सजीव, सुमधुर एवं स्पष्ट चित्रण हुआ है। प्रेम की पीड़ा ने भी इनकी कविताओं में अपनी अभिव्यक्ति पाई है। इन्होंने कानून एवं व्यवस्था के खोखलेपन पर करारा प्रहार किया है, साथ ही प्रजातंत्र के नाम पर चल रहे लूटतंत्र एवं गुण्डागर्दी को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया है। ऐसे में कभी-कभी इनकी रचनाओं में निराशा का स्वर भी मुखरित हो उठता है।

डॉ. व्यथित जी की काव्य रचना में परहित का संदेशा भरा है। इनकी काव्य-धारा अजस्र बहकर जनमानस को अभिसिक्त कर रही है। इस अध्याय में सिद्ध किया गया है कि व्यथितजी आधुनिक काव्येतिहास में एक उल्लेखनीय हस्ताक्षर हैं।

'पंचम् अध्याय' में डॉ. व्यथित जी के गद्य साहित्य की विवेचना की गई है। वैसे मूल रूप से व्यथित जी का स्वरूप काव्य का ही रहा है, किन्तु गद्य के रूप में उन्होंने अनेक सुन्दर ग्रंथों की संकल्पना की हैं। अपेक्षाकृत उन्होंने स्वतंत्र रूप से गद्य रचना कम ही की है किन्तु जो प्रमुख गद्य रचनाएं सामने आई हैं, उनमें अनुभूत तथ्यों को समावेश करने का यत्न किया गया है।

डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी की गद्य कृतियों में तीन कृतियाँ उल्लेखनीय हैं। (1) मंथन, (2) देस कै माटी और (3) बुढ़ापे की लकड़ी।

इस अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि डॉ. व्यथित जी की गद्य रचनाएँ उनके जीवन से जुड़ी हुई हैं। वे जीवन्त दास्तान हैं, जो उनके वैचारिक परिवेश को रेखांकित करती हैं। इस अध्याय में गद्य कृतियों के विश्लेषण के साथ-साथ उनके कथ्य, शिल्प, भाषा और वर्ण्य पर भी विस्तार से चर्चा की गई है।

'षष्ठ अध्याय' में मुख्य रूप से डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी के समग्र काव्य की कलापक्षीय विवेचना की गई है। इस अध्याय में यह सिद्ध किया है कि कवि जयसिंह 'व्यथित' जी अपने काव्य सृजन के संदर्भ में किसी आरोपित कला प्रदर्शन के पक्ष में नहीं रहे। उनका काव्य उनके हृदय की गहराइयों से निकलता है, जो बौद्धिक बोझिलता से सर्वथा परे है। यही कारण है कि उनके काव्य में भावात्मक उद्वेग स्थान-स्थान पर मिलता है। इस अध्याय में समग्र काव्य की सम्यक समीक्षा भी की गई है। उनके काव्य को कला की कसौटी पर कसते हुए उनके साहित्य स्वरूप को यहाँ विश्लेषित किया गया है। इस तरह षष्ठ अध्याय डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी का काव्य की एक संतुलित समीक्षा प्रस्तुत करता है।

'सप्तम् अध्याय' इस शोध-प्रबंध का अंतिम अध्याय है। जिसमें समग्र रूप से डॉ. जयसिंह 'व्यथित' जी के काव्य को मूल्यांकित किया गया है। वैसे तो प्रकारांतर से उनके कृतित्व की भावपक्षीय एवं कलापक्षीय समीक्षा अन्यत्र विस्तार से की जा चुकी है, किन्तु प्रस्तुत अध्याय में समग्र रूप से उनके सृजन का मूल्यांकन किया गया है।

यहाँ इस शोध-प्रबंध का उपसंहार भी प्रस्तुत किया गया है। तथा इसके पश्चात् परिशिष्ट में संदर्भ-ग्रंथों की भी सूची प्रस्तुत की गई है।